सूरज का सातवाँ घोड़ा

संघर्ष और सपनों की दास्तान

राम प्रकाश द्विवेदी

सूरज का सातवाँ घोड़ा : उपन्यास

Site: Virtual Learning Environment
Course: कथा साहित्य : कहानी/उपन्यास
Book: सूरज का सातवाँ घोड़ा : उपन्यास
Printed by: Guest User
Date: Sunday, 17 July 2016, 01:38 PM

Table of Contents

सामान्य परिचय

विषय-प्रवेश

धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व और कृत्तिव

सूरज का सातवाँ घोड़ा’ का कथानक

‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की चरित्र सृष्टि

रचना-प्रक्रिया तथा परिवेश

शिल्प, भाषा तथा सामाजिक उद्देश्य

विवेचन

निष्कर्ष

अभ्यास के लिए प्रश्न

व्याख्या के लिए अंश

प्रयोग

संदर्भ सूची

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

शब्दकोश

वेबसाइट और पोर्टल

सामान्य परिचय

विषय : हिन्दी

अध्याय : सूरज का सातवाँ घोड़ा

अध्याय लेखक : रामप्रकाश द्विवेदी

कॉलेज / विभाग : भीमराव अम्बेडकर कॉलेज (हिंदी विभाग), दिल्ली विश्वविद्यालय

विषय-प्रवेश

आधुनिकता के उदय (1800 ई0) के साथ हिंदी के विभिन्न गद्य-रुपों का विकास भी बहुत तेजी से प्रारंभ हुआ। कहानी, विचारपरक लेख, पत्रकारिता के लिए सूचनाप्रद रपट आदि हिंदी के प्रारंभिक रुप थे। भारत के प्रथम स्वाधीनता आंदोलन (1857 ई0) के बाद और भारतेंदु के साहित्य जगत में आगमन के साथ नाटक, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, निबंध और गद्य लेख अपना आकार ग्रहण करने लगे थे। देवरानी जेठानी की कहानी(पं0 गौरीदत्त शर्मा), भाग्यवती (श्रद्धाराम फिल्लौरी) और परीक्षा गुरु (श्रीनिवास दास) हिंदी के आरंभिक उपन्यास माने जाते हैं। चन्द्रकांता (देवकीनंदन खत्री) अपने ढंग का उपन्यास था, जिसने बड़ी संख्या में श्रोताओं को पाठक बनाया। मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) को उपन्यास-सम्राट कहा जाता है। उपन्यास, उप अर्थात समीप और न्यास अर्थात थाती के जोड़ से बना है, जिसका अर्थ हुआ (मनुष्य के) निकट रखी हुई वस्तु अर्थात वह वस्तु या कृति, जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है। उपन्यास के अनेक प्रकार मिलते हैं, जिसमें ऐतिहासिक, घटना-प्रधान, चरित्र-प्रधान, जासूसी, तिलस्मी, अय्यारी, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, आंचलिक आदि प्रमुख हैं। उपन्यास अपने कलेवर में बीस हजार शब्दों (विलियम कॉन्ग्रेव का 'इन कान्गिटा') से लेकर चार हजार पृष्ठों (मार्शल प्रुस्त का 'ए ला रिचर्च दु तोप्येर्दु') तक हो सकता है। उपन्यास और कहानी के बीच कथा-साहित्य की एक नयी विधा भी मानी जाती है, जिसे लघु उपन्यास या उपन्यासिका (शार्ट नॉवेल या नॉवलेट) कहा जाता है। इस विधा की अपनी रचना प्रक्रिया, तात्विक विशेषताएँ और स्वरुप है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' अनेक आलोचकों की राय में एक लघु उपन्यास है। इसकी अपनी शिल्पगत विशेषताएँ हैं और कई कहानियों को जोड़ता हुआ एक सूत्र माणिक मुल्ला का स्वयं का जीवन है। कथा आलोचकों ने उपन्यास के निम्न छह तत्व बताये हैं- कथा-वस्तु, पात्र, संवाद, देशकाल, शैली और उद्देश्य। इनके अतिरिक्त द्वंद्व या संघर्ष (कॉनफ्लिक्ट) तथा कुतूहल या द्वैधाभाव (सस्पेंस) आदि भी उपन्यास लेखन के अंग माने जाते हैं।

गद्य की विभिन्न विधाओं में उपन्यास का फलक अत्यंत व्यापक है। इसमें मध्यवर्ग अपनी समस्याओं के साथ उपस्थित होता है। पूंजीवादी व्यवस्था मोटे तौर पर समाज को तीन भागों में बांटती है, (1) बुर्जुआ (2) मध्य वर्ग और (3) निम्न वर्ग। मध्य वर्ग में नौकरी पेशा, वकील, शिक्षक, क्लर्क, और अन्य साधारण लोग आते हैं। इसे मूलत: बौद्धिक वर्ग माना जाता है। सामाजिक क्रांति के विचारों का सर्जन और जनजागरण का दायित्व इसी वर्ग पर होता है। मध्य वर्ग में भी दो भाग किये जा सकते हैं- उच्च-मध्य वर्ग और निम्न-मध्य वर्ग। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' निम्न मध्य वर्ग के जीवन-मूल्यों, संकट-बोध और स्वप्नदर्शिता की अभिव्यक्ति करता है।

आपने कहानियाँ पढ़ी होंगी। प्रेमचंद एक ऐसे कथाकार थे, जिन्होंने बड़ी सहज कहानियाँ लिखी हैं। उनकी आपने कोई न कोई कहानी अवश्य पढ़ी होगी। कहानी की तुलना में उपन्यास थोड़ा व्यापक होता है। सरल ढंग से कहें तो उसमें कई कहानियाँ एक-दूसरे में गुंथी होती हैं । कहानी और उपन्यास दोनों को ही कथा-साहित्य के अंतर्गत रखा जाता है। दोनों के तत्व भी एक जैसे हैं, जैसाकि ऊपर बताया भी गया है। धर्मवीर भारती ने भी अन्य विधाओं के साथ उपन्यास का भी लेखन किया है। धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' (1952) अपने अनूठे शिल्प–विधान और मध्यवर्गीय जीवन के नजरिए, मूल्य और मानसिकता को व्यक्त करने वाली एक श्रेष्ठ और रोचक कृति है। एक ओर जहाँ इस उपन्यास में नया कथा-विन्यास दिखता है, वहीं दूसरी ओर इसमें मध्यवर्ग की आकांक्षा, स्वप्न और संघर्ष की चेतना भी दिखाई देती है। यह विराट वर्ग कैसे लघुता की गिरफ्त में फँसा हुआ है-उसका दुचित्तापन, उसका विद्रोही तेवर और समझौतापरस्ती, सामाजिक-पारिवारिक मर्यादाओं की जकड़बंदी और इन्हें चटखाने की उसकी सफल-विफल कोशिशें इस उपन्यास की केंद्रीय समस्या के रूप में प्रकट होती हैं।

अधिकांश कथा आलोचक इसके प्रयोगधर्मी शिल्प की प्रशंसा करते हैं लेकिन कथ्य का विश्लेषण कहीं छूटता रहा है। इसका कथ्य ऊपरी तौर पर प्रेम कहानियों की शक्ल में आता है परंतु मध्यमवर्गीय समाज के मोहभंग, निराशा और स्वप्न-निर्मिति को यह उपन्यास रोचक, व्यंग्यपूर्ण और अनूठी किस्सागोई तथा अभिनव प्रयोग के माध्यम से व्यक्त करता है।

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' कथा और आत्मकथा की सहयात्रा के विधान में रचा गया है। उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की तुलना में मध्यवर्ग का जीवन अधिक विविधतापूर्ण, बहुआयामी, तनावमूलक, स्वप्नदर्शी और विरोधाभासी है। अपने इन्हीं गुणों के चलते मध्यवर्ग की जीवन वेदना महाकाव्यात्मक हो जाती है और उपन्यासकार सहज ही इन जीवन-मूल्यों की ओर आकृष्ट होते रहे हैं। मध्यवर्ग का आत्मानुभव लेखक के लिए सहज ग्राह्य होता है, क्योंकि वह स्वयं भी इसी वर्ग से आता है। मध्यवर्गीय जीवन उपन्यास की विषय वस्तु बनने के सर्वथा अनुकूल होता है।

धर्मवीर भारती का व्यक्तित्व और कृत्तिव

This photograph was taken in 1955 in Allahabad during a visit of sister Veerbala and her children to brother Dharamvir Bharati's home. The picture shows Bharati Ji holding a dog. Bharati Ji's wife Kanta Bharati is sitting. Veerbala stands on right. Children Gopal, Yogesh and Rajiv (Author) are seated in front (L to R).

छवि 1.1: धर्मवीर भारती का परिवार

इलाहाबाद

इलाहाबाद उ०प्र० का प्रसिद्ध शहर है। गंगा और यमुना नदियों का संगम भी यहीं होता है। इसलिये इसका पुराना नाम प्रयाग है। धार्मिक दृष्टि से भी इसकी पर्याप्त महत्ता है।

(उ.प्र.) में जन्में भारती ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपना अवदान किया है। एक उत्कृष्ट साहित्यकार के रूप में उनकी ख्याति तो है ही, लेकिन वे एक प्रखर आलोचक, खबरनवीस, और चिंतक भी माने जाते हैं। साहित्य की गहराई और पत्रकारिता का पैनापन उनकी अपनी सोच,परिवेश और जीवन-संघर्ष का परिणाम थे।

'अभ्युदय' (सं. पद्मकांत मालवीय) और 'संगम' (सं. इलाचंद्र जोशी) पत्रों में काम करते हूए, भारती 1960 में 'धर्मयुग' के संपादक बनकर मुंबई पहुँचे। इलाहाबाद के बाद मुंबई उनका स्थाई पड़ाव बना और 'धर्मयुग' से उनकी नयी पहचान कायम हूई। कवि, कहानीकार, नाटककार, आलोचक, उपन्यासकार और निबंध लेखक के रूप में उनका रचनात्मक व्यक्तित्व हमारे सामने उपस्थित होता है। इनके काव्य-ग्रंथों में 'ठंडा लोहा' ,'सात गीत वर्ष, 'कनुप्रिया' और 'सपना अभी भी,'आद्यान्त' सभी चर्चित रहे हैं। 'मुर्दों का गाँव,' 'स्वर्ग और पृथ्वी, 'चाँद और टूटे हूँए लोग, 'बंद गली का आखिरी मकान' इनके कहानी-संग्रह हैं। इनके द्वारा रचित 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' हिंदी उपन्यास की समर्थ कृतियाँ हैं।

ग्यारह सपनों का देश’, ’प्रारंभ और समापन’ अन्य औपन्यासिक रचनाएँ हैं। ‘अंधायुग’ प्रयोगधर्मी नाट्यकृति हैं, जिसमें नाटक और कविता की एक अनूठी सहयात्रा देखी जा सकती है। ‘सिद्ध साहित्य‘, ‘प्रगतिवाद: एक समीक्षा’ एवं ‘मानव मूल्य और साहित्य’ इनकी आलोचना कृतियाँ हैं। ‘ठेले पर हिमालय’, ‘कहनी-अनकहनी’ और ‘पश्यंती’ इनके उल्लेखनीय निबंध-संग्रह हैं। अनुवाद कार्य के साथ भारती ने एकांकी लेखन भी किया ।

छवि 1.3: उपन्यास : सूरज का सातवाँ घोड़ा जिस पर श्याम बेनेगल ने फिल्म भी बनाई

'नदी प्यासी थी’ इनका एकांकी-संग्रह है। ‘धर्मयुग’ के संपादक के रूप में इनकी सृजनशीलता का नया आयाम हमारे समक्ष उपस्थित होता है। कॉमनवेल्थ रिलेशंस और जर्मनी सरकार के सहयो्ग से इन्होने इंग्लैंड, यूरोप और जर्मनी का भ्रमण किया। भारतीय दूतावास के आमंत्रण पर वे इंडोनेशिया और थाईलैंड भी गए। मुक्तिवाहिनी के सदस्य के रूप में आपको बंग्लादेश जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। आपको भारत सरकार की ओर से पद्मश्री से भी नवाजा गया। 1972 में पद्मश्री से अलंकृत डॉ धर्मवीर भारती को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए, जिसमें से प्रमुख हैं: 1984 हल्दी घाटी श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन 1988 सर्वश्रेष्ठ नाटककार पुरस्कार संगीत नाटक अकादमी दिल्ली 1989, भारत भारती पुरस्कार उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान 1990, महाराष्ट्र गौरव, महाराष्ट्र सरकार 1994, व्यास सम्मान, के के बिड़ला फाउंडेशन । उपरोक्त संस्मरण में भारती जी की माणिक मुल्ला जैसी छवि उभरती है। ऐसा लगता है कि माणिक की जो किस्सागोई है वह भारती के व्यक्तित्व का अनिवार्य हिस्सा है। ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ का कथानक भी इसी की गवाही देता प्रतीत होता है।

सूरज का सातवाँ घोड़ा' का कथानक

इसे लघु उपन्यास की संज्ञा दी गयी है। कथानक की बुनावट उपन्यास की विषय–वस्तु को नए आयाम प्रदान करती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भी भारत-ईरान की प्राचीन शैलियों से प्रभावित माना जाता है। लेकिन, पुरानी किस्सागोई का यह तरीका – अलिफलैला, पंचतंत्र, दशकुमारचरित अथवा कथासरित्सागर – 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की ऊपरी त्वचा मात्र है, इसे कथानक का बुनियादी ढाँचा नहीं माना जा सकता। एक दूसरी शैली भी इसमें परिलक्षित की जा सकती है- वह है, वीरगाथाओं या अन्य महाकाव्यों जैसी शैली, जिसमें रचनाकार अपनी रचनाओं का रचयिता ही नहीं वरन् घटनाओं के बीच स्वयं भी उपस्थित है। वह भोक्ता और रचयिता दोनों है। इस प्रकार रचना तटस्थ होने, निजी अनुभूति को सार्वजनिक अनुभव में तब्दील करने का दायित्व बन जाती है। 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चंदवरदायी इसके महत्त्वपूर्ण् चरित्र भी हैं, ठीक उसी तरह जैसे वाल्मीकि और तुलसी खुद को अपनी रचनाओं में उपस्थित कर देते हैं या कि संजय महाभारत के घटनाचक्र में मौजूद है।

'सूरज का सातवाँ घोडा' के किस्से माणिक मुल्ला सुनाते हैं, लेकिन वे इन कहानियों के वक्ता मात्र ही नहीं – वे इनके बीच बड़ी शिद्दत से मौजूद हैं। वे इन कहानियों के भोक्ता भी हैं, ठीक वाल्मीकि, संजय और चंद की तरह। कहा जाता है कि 'रासो' को चंदवरदायी ने पूरा न कर यह काम अपने बेटे जल्हण को सौंप दिया था। 'रासो' के अंतिम अंश उसी के द्वारा लिखे गए, ठीक इसी प्रकार 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की कहानियाँ हैं तो सुनाई हुई माणिक मुल्ला की, परंतु उन्हें प्रस्तुत करता है उनका एक श्रोता 'मैं'। 'मैं' ही इसका मूल लेखक है लेकिन वह रामचरित मानस के तुलसी की तरह, जो रामकथा के शिव-पार्वती संवाद के प्रस्तोता मात्र बन जाते हैं- हमारे सामने आता है। वह माणिक द्वारा सुनाई कहानियों (जो अपनी श्रृंखलाबद्धता के चलते एक लघु उपन्यास का रुप धारण कर लेती हैं) के बारे में कहता है कि "अंत में मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस लघु उपन्यास की विषय-वस्तु में जो कुछ भलाई-बुराई हो उसका जिम्मा मुझ पर नहीं माणिक मुल्ला पर ही है। मैंने सिर्फ अपने ढंग से वह कथा आपके सामने रख दी है"। यह लेखक–प्रस्तोता भी कथा में भले ही एक मामूली हैसियत से-एक श्रोता के रूप में- मौजूद है। रचना और रचनाकार भारतीय परंपरा में सहज आवाजाही करते रहे हैं। यह उपन्यास भी अपने कथानक की बुनावट में कथा और कथाकार की तद्रूपता को संभव होने देता है। यथार्थ और कल्पना एक दूसरे के पूरक होने लगते हैं। यदि कहा जाय कि मध्यवर्ग आधा यथार्थ और आधा स्वप्न में जीने वाला वर्ग है तो गलत न होगा। सृजन के लिए भी कल्पना और हकीकत का संयोग एक अनिवार्य स्थिति है। इसलिए मध्यवर्ग सर्वाधिक सृजनशील, स्वप्नजीवी और बदलावमूलक होता है । 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' इसी मध्यवर्ग की दास्तान – उसकी अंतर्विरोधी स्थितियों के साथ – हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

इस रचना के कथानक को नए कलेवर में बुना गया है। शुरुआत उपोद्घात से हुई है। उपोद्घात यानी प्रस्तावना, भूमिका। मुख्य कथा-अध्यायों के बीच में चार अनध्याय भी जोड़े गए हैं। इनके अतिरिक्त पूरी कथा सात दोपहरों में विभक्त है। सात दोपहर की कथा माणिक मुल्ला की है और उपोद्घात समेत चार अनध्याय उनके श्रोता 'मैं' की टिप्पणियाँ हैं। कुल मिलाकर बारह भागों में विभाजित यह कथा माणिक मुल्ला के जीवन समेत उनके संपर्क में आए प्रमुख चरित्रों- जमुना, लिली और सत्ती की जिंदगी पर प्रकाश डालती है। साथ ही, यह भी पता चलता है कि इन पात्रों से जुड़े संदर्भों पर माणिक मुल्ला के श्रोताओं की प्रतिक्रिया कैसी थी। अपनी इन्हीं मिली-जुली घटनाओं को लेकर यह उपन्यास आकार ग्रहण करता है।उपोद्घात में हमें माणिक मुल्ला के व्यक्तित्व, उनकी अभिरुचियों, किस्से गढ़ने की उनकी क्षमता और उनको सुनाने के अंदाज के बारे में जानकारी मिलती है। यहीं हमें यह भी पता चलता है कि, ''अगर काफी फुरसत हो, पूरा घर अधिकार में हो, चार मित्र बैठे हों, तो निश्चित है कि घूम-फिरकर वार्ता राजनीति पर आ टिकेगी और जब राजनीति में दिलचस्पी खत्म होने लगेगी तो गोष्ठी की वार्ता 'प्रेम' पर आ टिकेगी।.......... लेकिन जहाँ तक साहित्यिक वार्ता का प्रश्न था, वे (माणिक मुल्ला) प्रेम को तरजीह दिया करते थे। इन कथनों

से पता चलता है कि उपन्यास लेखन के लिए जरूरी उपकरण कौन से हैं। वे हैं- फुरसत का समय, ऐसे लोग जो स्वयं फुरसत में हों और इसे काटने के लिए किस्सों का सहारा चाह रहे हों, ऐसी जगह जहाँ बाहरी व्यवधान न हो। राजनीति, प्रेम और साहित्य उपन्यास के सहज-स्वाभाविक विषय हो सकते हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचना इन्हीं उपकरणों के सहारे होती है। इसलिये यह कृति विराट सामाजिक प्रश्नों को नज़रअंदाज कर वैयक्तिक संदर्भों से रची जाती है। इसे महाकाव्यात्मक उपन्यास की श्रेणी में न रखकर लघु उपन्यास की श्रेणी में रखा गया है। आदर्श की स्थापना के बजाय यथार्थ का उदघाटन ही इसके केन्द्र में है। यह यथार्थ भी अपनी संवेदना और भावभूमि में लघुता को ही, रोजमर्रा की आम घटनाओं को ही अधिक उभारता है। माणिक मुल्ला समेत सभी चरित्र एक औसत चरित्र हैं, वे अपनी दैनिक घटनाओं से ही इतने अभिभूत हैं कि देश-दुनिया और समाज को अपनी निजी निगाहों से जाँचने-परखने का काम करते है। इसीलिए बड़े सामाजिक दर्शन की एक रिड्यूस्ड समझ उनकी बनती है। गिरिजा कुमार माथुर ने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के रचना-विधान को तीन कथा-वृत्तों में विभाजित किया है। 'प्रथम कथावृत्त का केंद्र माणिक मुल्ला है। जमुना, लिली और तन्ना केंद्र के उपग्रह। दूसरे कथा-वृत्त का केंद्र भी माणिक मुल्ला है, सती, महेसर और चमन सिंह केंद्र के उपग्रह। तीसरा कथा-वृत्त 'मैं' का है, जिसके एक ओर मार्क्सवादी सिद्धांतों का व्यंग्यपूर्ण चित्रण है और दूसरी ओर व्यक्तिवादी कला-पक्ष। यह वृत्त गौण है। गिरिजा कुमार माथुर ने आगे इसकी शिल्पगत विशेषताओं का उल्लेख करते हुए टिप्पणी की है कि, "अनध्याय में 'मैं' ने सबके चरित्र का विश्लेषण किसी न किसी रूप में किया है, किंतु माणिक मुल्ला से उसका इतना मोह है कि कहीं भी उनका संतुलित विश्लेषण उसने नहीं होने दिया है।अर्थात कहानी रचने वाला 'मैं' नामक जो श्रोता है, वह उपन्यास के भीतर दावा तो यह करता है कि मैं माणिक कथा को ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर रहा हूँ और टेकनीक समेत बाकी सभी वस्तुओं के लिए उसने माणिक मुल्ला को ही जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन वह तटस्थ नहीं रह सका। इस उपन्यास की संरचना में जैसे माणिक के बारे में प्रकाश का मत था कि, "हो न हो माणिक मुल्ला में भी हिंदी के अन्य कहानीकारों की तरह नारी के प्रति कुछ ऑब्सेशन है।" कुछ ऐसा ही ऑब्सेशन 'मैं' का माणिक के प्रति है। वह माणिक के विशिष्ट व्यक्तिव से अभिभूत है और संकल्पबद्ध होकर उनकी कहानियों को बचाने का उद्यम करता है । इस अनन्य श्रोता 'मैं' ने निश्चित ही इन कहानियों को महत्वपूर्ण माना है, इसीलिए माणिक मुल्ला के लापता होने पर उन्हें बचाने की दिशा में कलमबद्ध किया है। इसलिये 'मैं' को माणिक मुल्ला की कहानियों का तटस्थ प्रस्तोता नहीं माना जा सकता, वरन् 'मैं' और माणिक एक नहीं तो अधिकांशत: एक जैसे व्यक्ति हैं। इसीलिए माथुर तीसरे वृत्त को गौण मानते हैं।

खैर, इस उपन्यास के मुख्य सरोकार माणिक की कहानियों के इर्द-गिर्द ही विकसित होते हैं। वे देखने में सीमित लग सकते हैं लेकिन इससे कौन इंकार करेगा कि हमारी जिंदगी की अधिकतर ऊर्जा इन्हीं छोटी-मोटी समस्याओं को सुलझाने में निकल जाती है और मध्यवर्गी जनसमूह इन्हीं उपलब्धियों के द्वारा स्वयं को सार्थक महसूस कर पाता है। इसलिए 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' लघुता में महत् के तलाश की उल्लेखनीय कृति बन जाती है, और मध्यवर्ग की अदम्य आकांक्षा को प्रतिबिंबित करती है। उपन्यास में लौकिक मूल्यों की सक्रियता होती है। यथार्थवादी नजरिए के बिना उपन्यास की रचना संभव नहीं। उपन्यास को हम जीवन का कलात्मक विकल्प मान सकते हैं। एक उपन्यासकार घटनाओं, चरित्रों, परिस्थितियों, संवाद आदि के माध्यम से एक दुनिया अपने उपन्यास में बसाता है। ये चरित्र वास्तविक न होते हुए भी वास्तविकता का एहसास रचते हैं तथा 'जीवन और समाज की जटिलताओं से जूझने का प्रमाण' उपस्थित करते हैं। उपन्यासकार जिन विभिन्न तत्वों से अपनी औपन्यासिक दुनिया बनाता है, उनमें कथानक, कथोपकथन, देशकाल, शैली, और उद्देश्य महत्वपूर्ण होते हैं। नित्यानंद तिवारी का मानना है कि, "हर उपन्यासकार अपनी दृष्टि से जीवन की समस्याओं को चीरकर उनके भीतर से इन तत्वों का संगठन करता है। ये तत्व यांत्रिक फार्मूले नहीं । इनकी भूमिका नियामक नहीं, निर्देशक है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में इन तत्वों की उपस्थिति एक संतुलित अनुपात में आती है, लेकिन निजता पूरे कथा-विन्यास में अधिक सक्रिय रहती है।'

‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की चरित्र सृष्टि

माणिक, जमुना, तन्ना, लिली, सत्ती, महेसर, रामधन और चमन ठाकुर अपनी छोटी-छोटी हसरतों के साथ कहानी मे उपस्थित होते हैं। उनकी चाहत और सपने भी बहूत मामूली हैं। एक तरह से देखें तो कोई भी पात्र नैतिक-अनैतिक की श्रेणी में विभाजित नहीं है। स्याह-सफेद का बँटवारा साफ-साफ नहीं है। प्रेमचंद की परवर्ती रचनाओं (कफन,गोदान) की भाँति ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में अच्छे व बुरे का मूल्यांकन संभव नहीं है। उनका तनाव ही इस रचना को मौलिक बनाता है। माणिक, तन्ना, जमुना, लिली और सत्ती- घीसू और माधव के अधिक करीबी लगते हैं। सामाजिक मूल्यों के बरक्स हाथ आए अवसर को अपनी इच्छापूर्ति के लिए इस्तेमाल कर लेना ही इनकी सबसे बड़ी सार्थकता है। जैसे वे सामाजिक मूल्यों को बचाने का कोई उद्यम नहीं करते, वैसे ही सामाजिक रुढि़यों से टकराने का कोई इरादा इनमे नहीं दीखता। प्रतिरोध का अभाव इन चरित्रों का स्वभाव बन गया है। सत्तीं का प्रतिरोध भी निहायत निजी, वैयक्तिक और गैर-प्रभावी सिद्ध होता है। यदि ‘त्यागपत्र’ (जैनेन्द्र कुमार) के प्रमोद अपने पद से इस्तीफा देकर हरिद्वार का रुख करते हैं, तो माणिक सत्ती को भिखारियों के बीच देखकर गायब हो जाते हैं। स्वाभिमानिनी सत्ती एक श्रमशील और आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर स्त्री के रुप में उपन्यास में जरूर मौजूद है, लेकिन शोषण और छल उसे भिक्षावृत्ति करने को विवश कर देते हैं। उपन्यास में न तो कोई विराट संघर्ष है और न कोई विराट स्वप्न, फिर भी छोटी-छोटी स्थितियाँ मनुष्य की शक्ति को सोख लेती हैं। प्रेमचंद के मामूली चरित्र (सूरदास –रंगभूमि) बड़ी सत्ताओं से टकराकर ‘संघर्ष और शहादत का सुख’ पा सकते हैं लेकिन भारती के चरित्र आम घटनाओं के बीच ही पिसकर रह जाते हैं। उनकी कोई पहचान नहीं बन पाती। व्यक्तित्व का विगलन आजादी के बाद भारतीय मध्यवर्ग की सबसे बड़ी वेदना बन जाती है। ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा' विगलित और खण्डित व्यक्तित्वों की मार्मिक एवं करुण कथा है।

जमुना का चारित्रिक गठन एक भावुक लड़की के रुप में आरंभ होता है। परन्तु, धीरे-धीरे वह व्यावहारिक बनती है और आर्थिक जागरुकता की ओर आगे बढ़ती है। तन्ना के प्रति अपनी तमाम आसक्तियों के बावजूद उसका वर्तमान जीवन, आर्थिक समृद्धि और रामधन के साथ उसका साहचर्य उसे एक प्रौढ़ मानसिकता की स्त्री सिद्ध करते हैं। बदलती परिस्थितियों के साथ वह खुद को बदलती जाती है और सुरक्षित रहती है। मध्यवर्गीय व्यक्ति के लिए यह एक स्ट्रेटजी है-जिंदा रहने, सुखी होने के लिए। जमुना इसी रणनीति से काम करती है ।भावना एवं व्यवहारिकता का द्वंद्व उसमें समानांतर रुप से चलता है। इसे केवल अवसरवाद कहकर नहीं टाला जा सकता, जैसाकि गिरिजाकुमार माथुर कहते हैं- “जमुना अवसरवादी और समझौता-पसंद स्त्री है। उसके सामने न तो जीवन का कोई आदर्श है और न उसकी अपनी कोई इच्छा । वह प्रत्येक परिस्थिति से समझौता ही नहीं करती वरन् वह उसका उपयोग करती है।...... जमुना का समस्त जीवन वासना से ओतप्रोत और अर्थप्रधान है। दरअसल इसमें जमुना का दोष न होकर उस समाज-व्यवस्था की गहरी भूमिका है, जो पितृसत्तात्मक है। जहाँ पुरुष पूरे परिवार के फैसले लेता है और बच्चे तथा स्त्रियाँ उसका उपनिवेश बनकर रह जाती हैं। तन्ना और जमुना के प्रेम की वैवाहिक परिणति न होने में इसी पितृसत्तामूलक समाज-व्यवस्था की जकड़बंदी देखी जा सकती है। जमुना इन्हीं परिस्थितियों में खुद को बनाती-बिगाड़ती अपने अस्तित्व की रक्षा करती चलती है। वह कोई नायिका नहीं है, जिसने आदर्श मार्ग पर चलने का व्रत लिया हो। वह एक आम स्त्री है-अपनी कमजोरियों को सार्वजनिक करते हूए, अपनी राह बनाते हूए। जमुना और लिली की तुलना करते हूए, एक बार फिर गिरिजाकुमार माथुर लिखते हैं, "लिली भी जमुना का प्रतिरुप नहीं तो उसी वर्ग की है-उसमें भी संघर्ष करने की क्षमता नहीं है, केवल परिस्थितियों से भाग जाने की क्षमता है। अंतर केवल इतना है कि जमुना परिस्थितियों को ओढ़ लेती है....... लिली परिस्थितियों से भागती है और उन्हें भुला देने की कोशिश करती है। लिली के जीवन प्रसंग से ही एक सूत्रवाक्य माणिक को मिला था, जिसे उन्होंने एक फोटो के कैप्शन के रुप में सुरक्षित कर लिया था। वह था-खाओ,बदन बनाओ। भावुक लिली की जिंदगी से ऐसा निष्कर्ष निकालना मर्दवादी दृष्टिकोण को ही उभारता है। माणिक मुल्ला उन प्रसंगो को ज्यादा दिलचस्पी से बयां करते हैं, जो

रोमांटिक और समर्पणमूलक हैं। स्त्री की संघर्षशीलता, और समग्र स्थिति के चित्रण में उनकी कोई दिलचस्पी नहीं है। माणिक एक कविता के हवाले से लिली को लालसा भरी निगाहें, उनींदे आसुओं से आच्छादित जैसे पानी की बौछार में धुंधली दीखने वाली नीली झील की संज्ञा दी है। इसमें उनकी पसंद भी छिपी है। लिली के व्यक्तिव को उन्होंने कविता की तरह गढ़ा है। लिली से संवाद करते हुए वे खुद भी कवि हो जाते हैं- मैं चाहता हूँ मेरी लिली उतनी ही पवित्र, उतनी ही सूक्ष्म, उतनी ही दृढ़ बने जितनी देवसेना। माणिक पवित्रता, सूक्ष्मता, दृढ़ता आदि की अपेक्षा तो लिली से करते हैं लेकिन उनमें ये गुण मौजूद नहीं हैं। माणिक एक मौकापरस्त व्यक्ति के रूप में प्रकट होते हैं। जमुना और लिली, जो उनके प्रति आकर्षित हैं, उससे माणिक को कोई क्षति नहीं पहुँचती। सत्ती के साथ उनके संबंध की असल परीक्षा होती है, जिसमें वे खरे नहीं उतरते।

सत्ती स्वाभिमानिनी है और जमुना तथा लिली की तरह स्वप्नजीवी न होकर दुनिया की यथार्थ समझ रखती है। चमन ठाकुर और महेसर दलाल दोनों की नीयत की बेहतर रीडिंग वह कर सकती है। इसी के चलते काले बेंट का चाकू भी वह अपने पास रखती है। उसके बारे में कहा गया है कि, “वह कुछ ऐसी भावना जगाती थी, जो ऐसी ही कोई संगिनी जगा सकती थी, जो स्वाधीन हो, साहसी हो, जो मध्यवर्ग की मर्यादाओं के शीशों के पीछे सजी गुड़िया की तरह बेजान और खोखली न हो। जो सृजन और श्रम में, सामाजिक जीवन में उचित भाग लेती हो, अपना उचित देय देती हो, ऐसा लगता है कि माणिक की पूरी कथा में सत्ती एक संभावनाशील स्त्री के रूप में उपस्थित होती है। उसमें समाज के शोषण से लड़ने की क्षमता मौजूद है लेकिन अधिक समय तक उसकी यह ताकत टिक नहीं पाती। ‘’सत्ती माणिक के पाँव पर गिर पड़ी और बोली, “किसी तरह चमन ठाकुर से छूट कर आयी हूँ। अब डूब मरुँगी पर वहाँ नहीं लौटूंगी। तुम कहीं ले चलो। मैं काम करुगी। मजदूरी कर लूँगी। तुम्हारे भरोसे चली आयी हूँ। माणिक का यह हाल कि ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे। कविता-उविता तो ठीक है पर यह इल्लत माणिक कहाँ पालते। माणिक का चारित्रिक गठन, उनकी भीरुता, भावुकता, जोखिम न उठाने की फितरत, सामाजिक रुढियों का स्वीकार और निजी संबंधों के प्रति गैर ईमानदारी इस प्रसंग से उद्घाटित हो जाते हैं। माणिक पहली बार वास्तविक समस्याओं से रुबरु होते हैं और निर्णय के इस क्षण में वे पूरी तरह विफल हो जाते हैं। जमुना और लिली ने अपने संबंधों के चलते माणिक के लिए कोई समस्या नहीं पैदा की थी, इसलिए वे संबंध निभते रहे लेकिन जब सत्ती अपनी ठोस व वास्तविक समस्या के साथ उपस्थित होती है तो माणिक हडबड़ा जाते हैं। उन्हें शीशे के पीछे सजी हूई गुड़िया की तरह बेजान और खोखली संगिनी भी नहीं चाहिए और सत्ती की तरह स्वाधीन और साहसी भी नहीं। माणिक का यह दुचित्तापन उनके व्यक्तित्व की केंद्रीय विशेषता है। वे एक ठेठ मध्यवर्गीय व्यक्ति हैं, जो अपनी कमियों को ढँकने के लिए अपने सिद्धांत गढ़ लेता है और जब कुछ और संभव नहीं होता तो एक कलात्मक विकल्प विकसित करता है, कथाकार हो जाता है और अपनी विफलताओं को उसमें घुला देता है।

देवेन्द्र इस्सर कहते हैं कि, ‘मुझे जो बात परेशान करती रही है, वह माणिक की पूर्व निश्चित त्रासदी है। क्या स्वप्नों की निष्फलता और जीवन की निरर्थकता से कोई निजात मुमकिन नहीं। क्या ऐसी अंतहीन अंधेरी सुरंग में दाखिल हो चुका है कि उस पार रोशनियों का कोई शहर नहीं। आत्महत्या, आत्मसमर्पण, विद्रोह, पलायन-मनुष्य क्या करे। इस उपन्यास में तथाकथित निष्कर्षों से ज्यादा जो मूल्यगत दुविधा है, वही इसकी शक्ति है।’

आजादी के बाद भारतीय मध्यवर्ग जिन परिस्थितियों से गुजर रहा था, जिन चिंताओ, दुविधाओं, सरोकारों ने उसे घेरा हुआ था, उसे सूरज का सातवाँ घोड़ा में देखा तो जा सकता है, पर उस घेरे को तोड़ने का उपक्रम उसमें मौजूद नहीं है। अनेक आलोचक विद्वानों ने जमुना लिली और सत्ती के बच्चों को सूरज के सातवें घोड़े से जोड़कर यह प्रतिपादित किया है कि वर्तमान भले ही ठीक न हो , भविष्य में बेहतरी की संभावना अवश्य की जा सकती है। भले ही सूरज के छ: घोड़े छिन्न–भिन्न हो गए हों, भले जमुना, लिली, सत्ती, तन्ना, माणिक का जीवन अपूर्ण-अधूरा रह गया हो परंतु इनके बच्चों से, सूरज के सातवें घोड़े से अभी भी अपेक्षा की जा सकती है। हमें ध्यान रखना चाहिए कि ये वे बच्चे हैं, जिन्हें ‘अवैध’ माना जा सकता है। वे किस प्रकार भविष्य को

सँवारेंगे यह एक जटिल प्रश्न है? क्या देश और समाज की विरासत भी अवैध हाथों में पहुँच चुकी है। आजादी के आंदोलन का स्वप्न और संघर्ष एक बार फिर छलावा सिद्ध हूए हैं। 'सूरज का सातवाँ' घोड़ा इसी आत्मद्वंद्व को मामूली घटनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है।

रचना-प्रक्रिया तथा परिवेश

आधुनिक भावबोध एवं व्यवस्था का निर्माण संस्थानों द्वारा हुआ है। इन संस्थानों- संगठनों ने मनुष्य की नियति को नए तरीके से परिभाषित किया है। व्यवस्था से जब व्यक्ति टकराते हैं तो उनकी पराजय निश्चित होती है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' समाज-व्यवस्था के समानांतर व्यक्तियों की टकराहट और उनकी विफलता को रेखांकित करता है। व्यक्ति जब संगठित नहीं हो पाता या वह संगठन में सम्मिलित होने से घबराता है कि कहीं उसकी स्वतंत्रता खतरे में न पड़ जाय, तो उसकी संघर्षशीलता भी सीमित हो जाती है। विवाह संस्था की पवित्रता और नैतिकता इस उपन्यास में सीधे तौर पर प्रश्नांकित होती है। इसके केन्द्र में प्रेम की वैवाहिक परिणति न हो पाना भी है। तन्ना और जमुना, लिली ओर माणिक तथा सत्ती और माणिक के रिश्तों को बीच में ही टूटना पड़ता है। इनके पीछे इन युग्मों की आर्थिक परनिर्भरता तो है ही, सामाजिक मूल्य और व्यवस्था भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

महेसर दलाल अपनी आर्थिक मजबूती के चलते सामाजिक व्यवस्था को माखौल में बदल देता है। तन्ना की विधवा सास के संपर्क में आने पर अपनी अवैध पत्नी उर्फ तन्ना एवं उसकी बहनों की तथाकथित बुआ के प्रति उदासीन हो जाता है। जब यह बुआ अपना हक़ जताने लगती है, महेसर एक पल में उसे घर से निकाल देता है। आर्थिक स्थितियों ने समाज-व्यवस्था को अपने मातहत कर लिया है। महेसर की सत्ती के प्रति आसक्ति और चमन ठाकुर को धन का लालच देना अर्थतंत्र के वर्चस्व को ही दर्शाता है। उपन्यास का अंत भी अत्यंत मार्मिक है, जब सत्ती भिक्षावृत्ति करती दिखायी देती है। माणिक इसी घटना के बाद लापता हो जाते हैं। माणिक, जो अभी तक तटस्थ और निरपेक्ष ढंग से ऑबजेक्टिव होकर कहानियाँ सुना रहे थे-सत्ती की भीख माँगने की घटना से निहायत सब्जेक्टिव ढंग से जुड़ जाते हैं और वैयक्तिक आघात से गुजरते हैं। निजी आकांक्षा और समाज-व्यवस्था अर्थतंत्र के नीचे दब जाती है। भारती लिखते हैं-पिछले तीन-चार वर्षों में मार्क्सवाद के अध्ययन से मुझे जितनी शांति, जितना बल और जितनी आशा मिली है, हिंदी की मार्क्सवादी समीक्षा और चिंतन से उतनी निराशा और असंतोष। ......इसके बावजूद मेरी आस्था कभी भी मार्क्सवाद में कम नहीं हुई। और न मैने अपनी जनता के दुख-दर्द से मुँह फेरा है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की संवेदना अपने ऊपरी कलेवर में निजी, आत्मगत और रोमानी लगती है लेकिन अपनी भीतरी संरचना में वह आर्थिक परिस्थितियों की बुनावट करती है। भारती का कथन इस लघु उपन्यास की रचना-प्रक्रिया का सहज उद्घाटन करता है। मार्क्सवाद की यांत्रिकता का विरोध भारती व्यंग्य द्वारा करते हैं। इसके पीछे उनकी साफ समझ दिखाई देती है। वे किसी भी दर्शन के सृजनात्मक उपयोग पर बल देते हैं। यही सृजनात्मकता दर्शन को संवेदना के स्तर पर गठित करती है। भारती की चिंता यह है कि मार्क्सवाद को साहित्य आलोचकों और चिंतकों ने बड़े ही गैर रचनात्मक तरीके से उपस्थित किया है। सूरज का सातवाँ घोड़ा संभवत: इसी चुनौती की उपज है। इसलिए आर्थिक प्रश्न इसमें गौण नही हुए है।

उपन्यास-लेखन, मध्यवर्ग से आए लागों द्वारा ही संभव होता रहा है। उपन्यासों के पाठक भी इसी वर्ग से आते हैं। समाज का सबसे गतिशील वर्ग भी यही माना जाता है, यह वर्ग लौकिक मूल्यों का आग्रही होता है। अपनी निराशा और विफलता को छिपाने का अनूठा मनोविज्ञान इसके पास होता है। अवसरों की निरंतर तलाश और उनके अनुसार खुद को अनुकूलित करने का रंग-ढंग भी उसे बखूबी आता है। माणिक मुल्ला इस वर्ग के सच्चे प्रतिनिधि दिखाई देते हैं। अन्य चरित्रों में भी इस मानसिकता को देखा जा सकता है। "मध्यवर्गीय वास्तविकता के अनेक आयाम इसमें चरित्रों की परिणति के कारण बने हैं। आर्थिक तंगी, नैतिकता, अवैज्ञानिक परंपराएँ, जातिगत अहं और समाज भय, हीनभावना और कायरता, रोमांटिक भाव, पारिवारिक कर्तव्य, भावनाएॅ, खोखले आदर्श,स्थितिशील आचरण, धर्म और गति के प्रति शंका एवं भय, स्वप्नमय अवस्था में जीने की बाध्यता – ये सारे पहलू कहानियों के घटनाप्रवाह को जन्म, गति और आकार

देते हैं।''[1]चूँकि, माणिक मुल्ला इन कहानियों से वास्तविक रूप से जुडे रहे हैं, इसलिए वे अपने नजरिए का सम्मिश्रण इसमें करते हुए ही इसे पेश करते हैं। माना जा सकता कि वे एक तटस्थ अनुभव की प्रस्तुति इसमें कर रहे हैं। वे घटनाएँ, जो उनके जीवन से अभिन्न रूप से जुडी रहीं हैं, वे समय बीतने के साथ अपनी आवेगमयता त्याग कर कथा का रूप धारण कर लेती हैं। कथा कहना और सुनना दोनों ही जैसे एक नयी संभावना रचता है। अपने तनावों कुंठाओं से मुक्ति की राह बनाता है। एक दिन कथा शुरु होने से पहले प्रकाश ने कहा कि-''भाई जी उमस हम सब की जिंदगी में छायी हुई है ।... हम सब निम्न मध्य श्रेणी के लोगों की जिंदगी में हवा का एक ताजा झोंका नहीं।... किसी-न-किसी तरह ताजी हवा के झोंके चलने चाहिए । चाहे लू के ही झोंके क्यों न हों। एक ताजी हवा की चाहत उन्हें कहानियों से जोड़ती है। कहानियाँ सुनना-सुनाना बदलाव की प्रक्रिया में शिरकत करने जैसा हो जाता है। एक स्वप्न-निर्माण की प्रक्रिया भी। लेकिन, एक दिन कथावाचक माणिक मुल्ला सत्ती को अपने बच्चे और चमन ठाकुर के साथ भीख माँगते देखकर विचलित हो जाते हैं और फिर गायब। यह पलायन का एक नया रूप है। भारती अपने इस उपन्यास में आशा और संभावना की एक धुंधली तस्वीर तो पेश करते हैं लेकिन वह ठोस रूप ग्रहण नहीं कर पाती ।

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचनात्मक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए कहा गया है कि– दोनों विश्वयुद्धों की सुलगन अभी वातावरण में बसी हुई थी। साम्राज्यवाद अपना विस्तर गोल कर रहा था और साम्यवाद अपने सबसे कट्टर शत्रु पूँजीवाद के सामने सीना तान कर खड़ा हो चुका था, भारती ने इसी समय यह पहचान भी की कि विचारधाराएँ प्रमुख और मनुष्य गौण होता जा रहा है। उन्होंने निजता को प्रमुखता देते हुए वैचारिक यांत्रिकता को तोड़ा। सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हुए बड़े हल्के किस्म के निष्कर्ष निकालना केवल व्यंग्य-विनोद के लिए नहीं है। वह अधिक गहरा और मार्मिक है। आजादी के बाद जनकल्याण का जो स्वांग रचा गया, उसकी योजनाओं की फेहरिस्त के भीतर विस्थापित होते मनुष्य और टूटती आकांक्षा को ही 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' संबोधित करता है।

शिल्प, भाषा तथा सामाजिक उद्देश्य

उपन्यास का शिल्प उसके कथ्य से अलग नहीं किया जा सकता। संवेदना अपने को व्यक्त करने के लिए जो रूप ग्रहण करती है, उसे शिल्प कहा जाता है। उपन्यास में शिल्प भाषा के द्वारा गढ़ा जाता है। उपन्यास के विभिन्न घटकों की आंतरिक संगति से उसका शिल्प आकार पाता है। ‘‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में लेखक कहानी की विलक्षण तकनीक का उपयोग करते हुए कहानी के परंपरागत ढाँचे या तकनीक का मखौल उड़ाता है। ....इसका कारण यह है कि कलाकार मानता है कि उसके पास जीवनानुभव को देखने की मौलिक दृष्टि हो और संप्रेषण के उत्पादनों पर अच्छी पकड़ हो, तो तकनीकी उपादान(नए हो या पुराने), शैली विषयक संकेत, शिल्प विषयक स्वीकृत अवधारणाएँ ओर समीक्षात्मक संकल्पनाएँ - ये सब कलंदर कलाकार के सामने हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं’’। कहने का अर्थ यह कि मौलिक संवेदना अपने शिल्प का आविष्कार खुद-ब-खुद कर लेती है। इसे एक सामान्य किस्म के उदाहरण से भी समझा जा सकता है। जब हम क्रोध, भय, प्रेम आदि भावदशाओं से गुजरते हैं तो हमारी भाषा, वाक्य-संरचना और शैली भिन्न-भिन्न रूप धारण कर प्रकट होती है। इसी प्रकार रचनाकार जब किसी विषय–वस्तु को उभारना चाहता है तो उसका शिल्प स्वत: भी विकसित होता चलता है लेकिन रचनाकार के लिए शिल्प साधना एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। शिल्प गठन एक सचेत उद्यम भी है। उपरोक्त विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि कथ्य और शिल्प एक दूसरे से जुदा न होकर एक दूसरे के पूरक और सहयात्री हैं। इसे ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में भी साफ तौर पर देखा जा सकता है।

इस उपन्यास की शिल्पगत चुनौतियों की ओर संकेत करते हुए भारती ने स्वयं लिखा है-‘‘ कथा शैली भी कुछ अनोखे ढंग की है, जो है तो वास्तव में पुरानी ही, पर इतनी पुरानी कि आज के पाठक को थोड़ी नयी या अपरिचित सी लग सकती है। बहुत छोटे से चौखटे में काफी लंबा घटनाक्रम काफी विस्तृत क्षेत्र का चित्रण करने की विवशता के कारण यह ढंग अपनाना पड़ा’’। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सबसे पहले माणिक के बारे में सूचनाएँ-उपोद्घात– में दी जाती हैं। इससे दो बातें साफ हो जाती हैं, एक तो यह कि माणिक मुल्ला की जिंदगी, विचार, आचरण आदि कैसा था और दूसरा यह कि वे किन मनुष्यों, परिस्थितियों और सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से घिरे थे।

इसका उद्घाटन करते हुए हमें ‘मैं’ और माणिक मुल्ला की भाषा-शैली और अभिव्यक्ति कौशल का पता चलता है। व्यंग्य उनके व्यक्तित्व की केन्द्रीय विशेषता है। यह व्यंग्य साहित्य की रचना-प्रक्रिया, कथा टेकनीक, प्रेम और राजनीति जैसे विषय और मार्क्सवादी विचारधारा तथा शिल्प-विधान को लेकर जो यांत्रिक समझ बना ली गई है, उसे तोड़ता है। हिंदी कहानी परंपरा पर टिप्पणी के रूप में ये वाक्यांश- ‘कि हिंदी में बहुत-से कहानीकार इसीलिए प्रसिद्ध हो गए हैं कि उनकी कहानी में कथानक चाहे लंगड़ाता हो, पात्र चाहे पिलपिले हों, लेकिन सामाजिक तथा राजनीतिक निष्कर्ष अद्भुत होते हैं और ‘माणिक मुल्ला का चमत्कार यह था कि जैसे बाजीगर मुँह से आम निकाल देता है वैसे ही वे इन कहानियों से सामाजिक कल्याण के निष्कर्ष निकाल देने में समर्थ थे’- एक महत्वपूर्ण संकेत करते हैं। यहाँ कथा-साहित्य लेखन और उसकी समीक्षा पद्धति पर करारा व्यंग्य है। लेकिन, इसे आत्म-व्यंग्य की शैली में प्रस्तुत किया गया है। माणिक स्वयं उसी कथा-परंपरा के प्रतिनिधि हैं, इसलिए अपने ऊपर व्यंग्य कराकर वे संभतवत: नए शिल्प की माँग करते हैं और उसका ‘मॉडल’, ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में पेश करवाते हैं।

जिन मध्यवर्गीय चरित्रों की जीवन-गाथा इस उपन्यास में बुनी गई है, उसे व्यक्त करने के लिए जरुरी था कि भाषा भी उसी वर्ग की हो। ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की भाषा एक अनौपचारिकता लिए हूए है। यह अनौपचारिक भाषा उपन्यास के भीतर मौजूद मनुष्यों के बीच आपसी संबंधों को प्रामाणिक बनाती है। परिवार, पड़ोस और परिचित-समूह के बीच ही सारी घटनाएँ घटती हैं। ये सब अनौपचारिक संस्थान ही हैं। घटनाओं के घटने ही नहीं वरन् घटनाओं के आख्यान का माहौल भी अनौपचारिक ही है। माणिक मुल्ला अपने मित्रवत् शार्गिदों के बीच कहानियाँ सुनाते हैं। वैसे भी प्रेमकथाओं के वक्ता-श्रोता औपचारिकता को

तोड़कर ही साधारणीकृत हो सकते हैं। कहना न होगा कि अपनी विषयवस्तु और घटना परिवेश के चलते ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में प्रयुक्त भाषा आम मध्यवर्ग की निकटतम भाषा है, जो एक खास रवानगी और जबानों के सम्मिश्रण से निर्मित होती है। धर्मवीर भारती भाषा से अभिप्राय को छिपाने और प्रकट करने में सिद्धहस्त हैं। वे तत्सम और तद्भव शब्दों को अगल-बगल रखकर उनकी टकराहट से अर्थ उत्पन्न करते हैं। एक उद्धरण लेते हैं-‘डाक ले जाते हूँए एक बार रेल में नीमसार जाती हुई तीर्थयात्रिणी जमुना मिली। साथ में रामधन था। जमुना बड़ी ममता से पास आकर बैठ गई उसके बच्चे ने मामा को प्रणाम किया। जमुना ने दोनों को रवाना दिया। कौर तोड़ते हुए तन्ना की आँख में आँसू आ गए। जमुना ने कहा भी कि कोठी है, ताँगा है, खुली आबोहवा है, आकर कुछ दिन रहो, तन्दुरूस्ती संभल जाएगी, पर बेचारे तन्ना नैतिकता और ईमानदारी बड़ी चीज होती है’। यदि इस अनुच्छेद का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि ‘नीमसार’ (नेमिशारण्य का देशज) और ‘तीर्थयात्रिणी’ जैसे शब्द जमुना के चारित्रिक-गठन को एक व्यंग्यात्मक आयाम प्रदान करते हैं। जमुना के लिए नेमिशारण्य की पवित्रता, अध्यात्मिकता का कोई औचित्य नहीं है। इसीलिए लेखक ‘नीमसार’ का प्रयोग करता है और फिर तत्समनिष्ठ व्यंग्यपरक विशेषण ‘तीर्थयात्रिणी’ तो जैसे जमुना के पूरे मनोजगत को विस्फोट की तरह प्रकट कर देता है।‘बच्चे ने ‘मामा’ को प्रणाम किया’। यहाँ ‘मामा’ शब्द समाज-व्यवस्था और स्त्री-पुरुष संबंधों के स्वांग को पूरे तनाव के साथ उभार देता है। इसी प्रकार अन्यत्र एक और रिश्तासूचक शब्द ‘बुआ’ का प्रयोग भी विडम्बनापूर्ण स्थितियों का उद्घाटक बन गया है। जमुना के द्वारा तन्ना को दिया गया निमंत्रण कोठी, ताँगा, खुली आबोहवा और तंदुरूस्ती संभलने का लालच देना-भी एक मार्मिक प्रसंग का निर्माण करते हैं। जमुना और तन्ना के रिश्ते इस प्रकरण के माध्यम से नए रुप में प्रकट होते हैं और पारंपरिक समाजशास्त्र इनको परिभाषित करने में अक्षम सिद्ध होता है। उसके शब्द जैसे चुक जाते हैं। इसी प्रकार तन्ना के लिए प्रयुक्त वाक्यांश- ‘नैतिकता और ईमानदारी बड़ी चीज है’ भी मूल्यों की टकराहट और आत्मसंघर्ष को द्योतित करता है। साथ ही नैतिकता और ईमानदारी के लिए ‘चीज’ का प्रयोग वह भी विशेषण ‘बड़ी’ के साथ, इन मूल्यों के विघटन और निस्सारता को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की भाषा-संरचना और शैली, विराट फलक को इसी विश्वास से घनीभूत करते हुए, उसका संक्षेपण करने में समर्थ हो पाती है।

भारती ने इस उपन्यास में जो एक और प्रयोग किया है, वह है छोटे-छोटे वाक्यों की संरचना। इससे लाभ यह हुआ कि किस्सा कहने में एक प्रवाह बना। कहने की शैली मुक्कमल बन गई। दृश्य उभरते चले गए। संवाद सहज संप्रेष्य हो गए। “अगले दिन मैं गया और माणिक मुल्ला से बताया कि मैंने यह सपना देखा है तो वे झल्ला गए, देखा है तो मैं क्या करूँ। जब देखो तब सपना देखा है, सपना देखा है। अरे कौन शेर-चीता देखा है कि गाते फिरते हो।” जब मैं चुप हो गया तो माणिक मुल्ला मेरे पास आए और सांत्वना भरे शब्दों में बोले, ’ऐसे सपने तुम अक्सर देखते हो‘। मैने कहा-हाँ, तो बोले, इसका मतलब है कि प्रकृति ने तुम्हें विशेष कार्य के लिए चुना है. वार्तालाप शैली का यह अनूठा उदाहरण है। अंतिम वाक्य एक सूत्र की भांति प्रकट होता है और बुद्धिजीवियों के एक चिर परिचित अनुभव को दर्शाता है। भारती ने इसी प्रकार व्यंग्य से विरोधी अर्थ प्रकट करने का प्रयास इस उपन्यास में किया है। भाषा, शैली, संवाद और बिंब मूलकता इस उपन्यास में कथ्य की अभिव्यक्ति का समर्थ साधन बने हैं। अपने उद्देश्य को रेखांकित करने के लिए धर्मवीर भारती इनकी सजग और आनुपातिक बुनावट करते हैं, अपने पाठकों का अभिवादन स्वीकार करते हुए भारती ने निवेदन में लिखा है कि, ‘जो कुछ लिखता हूँ, उसमें सामाजिक उद्देश्य अवश्य है। पर वह स्वान्त: सुखाय भी है। यह अवश्य है कि मेरे स्व में आप सभी सम्मिलित हैं, आप सभी का सुख-दु:ख, वेदना-उल्लास मेरा अपना है। वास्तव में वह कोई बहुत बड़ी कहानी है, जो हम सबों के माध्यम से व्यक्त हो रही है। इस स्व का विस्तार करते हुए, वे आगे बताते है कि “देखो ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन उस जिंदगी का चित्रण करती हैं, जिसे आज का निम्न मध्यवर्ग जी रहा है। उसमें प्रेम से कहीं ज्यादा हो गया है, आज का आर्थिक संघर्ष, नैतिक विश्रृंखलता, इसीलिए इतना अनाचार, निराशा, कटुता, और अंधेरा मध्यवर्ग पर छा गया है।” ‘स्व’ से ‘पर’ की यात्रा-आत्मानुभव से सामाजिक समस्याओं के बोध तक पहुँचना ही इस उपन्यास का केंद्रीय उद्देश्य माना जा सकता है। उपन्यास अपने कलेवर में भले ही कुछ व्यक्ति-चरित्रों

की व्यथा-कथा जैसा प्रतीत होता हो, लेकिन मध्यवर्ग का मोहभंग, उसकी आंदोलन विमुखता और निजता तथा रोजमर्रा की चुनौतियाँ ही इसके केंद्र में हैं। अपने व्यंग्य, ब्यौरे और व्यवस्था पर टिप्पणी के चलते यह उपन्यास हिंदी कथा साहित्य की मूल्यवान कृति बन जाता है।

विवेचन

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आजादी के बाद भारत के मध्यवर्ग में व्याप्त निराशा और उसकी आत्मोन्मुखता का उद्घाटन करता है। कहानी कहने वाले माणिक मुल्ला और कथा श्रोता दोनों मूल कथा से जुड़ ही इसलिए पाते हैं कि उसमें उनके निजी अनुभव की बुनावट हुई है। इस निजता का उभयनिष्ठ पक्ष यह है कि पूरा मध्यवर्ग उसमें समाहित हो जाता है। बड़े लक्ष्य के बजाय छोटे-छोटे सपने, मनमुटाव, झगड़े और उपलब्धियाँ ही इसको संतोष देने लगती हैं। इस उपन्यास में आशा और अंधकार एक तनाव के रूप में कथा-प्रवाह को ताने रखते हैं। अंधकार प्रगाढ़ होने के बाद टूट जाता है। निराशा के भीतर से अचानक उम्मीद की एक लौ भभक पड़ती है। अज्ञेय ने इसकी ओर संकेत करते हुए लिखा है कि, 'उसमें(सूरज का सातवाँ घोड़ा) दो चीजें हैं जो उसे इस खतरे से उबारती हैं- और इनमें से एक भी काफी होती है- एक तो उसका हास्य, भले ही वह वक्र और कभी कुटिल या विद्रूप भी हो, दूसरे एक अदम्य और निष्ठामयी आशा। वास्तव में जीवन के प्रति यह अडिग आस्था ही सूरज का सातवाँ घोड़ा है। भारती ने अपने पहले उपन्यास गुनाहों का देवता (1949) की तुलना में इस उपन्यास में भावनात्मक आवेग को संतुलित किया है। इसलिए इसकी किस्सागोई दुख-दर्द को उभारते हुए उसमें शरीक करने का प्रयत्न नहीं करती वरन् उससे विच्छिन्न कर देती है। तटस्थता और भागीदारी की यह चुनौती इस उपन्यास का शिल्प निर्मित करती है। शिल्प का सर्वथा अभिनव प्रयोग इसमें देखा जा सकता है। कथाकार, कथा का ही हिस्सा है। कथा लेखक एक सजग श्रोता और कथा के महत्व को समझने वाले एक कलमकार की भूमिका में उपस्थित है। जैसा सुना, वैसा लिखा। लेकिन 'उपोद्घात' और 'अनध्यायों' में उसके कौशल को जान पाते हैं।''सूरज का सातवाँ घोड़ा' एक कहानी में अनेक कहानियाँ नहीं, अनेक कहानियों में एक कहानी है। इसी अर्थ में वह निजता से सामाजिकता का आख्यान बन गया है । माणिक, तन्ना, जमुना, लिली, सती, महेसर, चमन ठाकुर केवल वैयक्तिक चरित्र न होकर मध्यवर्ग की विभिन्न परिस्थितियों के प्रतिनिधि भी बन जाते हैं। ठीक ही कहा गया है कि यह उपन्यास, 'पूरे समाज का चित्र और आलोचन है, और जैसे उस समाज की अनंत शक्तियाँ परस्पर संबद्ध, परस्पर आश्रित और परस्पर सम्भूत हैं, वैसे ही उसकी कहानियाँ भी।-'सूरज का सातवाँ घोड़ा' भारतीय सामाजिक संरचना, उसके ताने-बाने, संस्थाओं की टकराहट और व्यक्ति-स्वातंत्र्य को उदघाटित करने हेतु वृत्ताकार कथा-संरचना को धारण करता है। सामाजिक घटनाओं के प्रति निजी प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होती है। देश और काल में भी इनकी व्याप्ति अलग तरह से हो सकती है। भारती ने कथा के कलेवर को प्रेम आधारित बनाकर इसके देश-काल के आयाम को फैला दिया है। वास्तव में यहाँ प्रेम एक मूल्य के रूप में यहाँ आया है और उसके विश्रृखंल होने का अर्थ मूल्यव्यवस्था के विखराव से है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' विघटित मूल्यों का साक्ष्य उपस्थित करता है। 'पर कोई न कोई चीज ऐसी है, जिसने हमेशा अंधकार को चीर कर आगे बढ़ने, समाज व्यवस्था को बदलने और मानवता के सहज मूल्यों को पुन: स्थापित करने की ताकत और प्रेरणा दी है। उपन्यास अपने समापन तक पहुँचते हुए भावी पीढ़ी के माध्यम से नए सपनों का सृजन करता है। मानवीय जिजीविषा को अंधकार में भटकने से भारती बचा लेते हैं। इस उपन्यास में भारती वैचारिक आग्रह के सवाल को भी उठाते हैं, जिसमें रचना-प्रक्रिया के प्रश्नों को सहज ही लक्षित किया जा सकता है। सृजनात्मकता, वैचारिकी की ऊर्जा तो ग्रहण कर सकती है परंतु उसका यांत्रिक इस्तेमाल नहीं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की रचना-प्रक्रिया इसी उद्देश्य को आगे लेकर बढ़ती है। सामाजिक चिंताओं का अनोखा ताना-बाना इसमें मौजूद है, पर कहीं भी वह अपने ठस्स रूप में नहीं प्रकट होता। भाषा के स्वत:-स्फूर्त प्रवाह, कथन-शैली और वाक्य-भंगिमाओं से वह निखरता चलता है। कहानियाँ एक सूत्र में पिरो उठती हैं और सामाजिक सरोकार उनके भीतर से खुद-ब-खुद फूटने लगते हैं। किस्सा और किस्सागो एक हो जाते हैं। संप्रेषण और संदेश -सूरज के सातवें घोड़े पर बैठ सहयात्रा के लिए प्रस्थान करते हैं।

निष्कर्ष

'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आजाद भारत के मध्यवर्गीय जीवन को उद्घाटित करने वाली एक समर्थ रचना है। विचार को सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत करने की चुनौती के बीच इसका शिल्प आकार पाता है। प्राय: यही कारण है कि सभी आलोचकों ने इसके शिल्प-कौशल की प्रशंसा की है। आजादी के पहले हिंदी उपन्यास ने मध्यवर्ग की मूल्यवत्ता और संघर्षधर्मिता का ही चित्रण अधिक किया है। बाद में यह स्थिति बदलती है। शोषण और प्रवंचना का नया दौर शुरु होने पर हिंदी लेखक भी नए तेवर और सृजन के नए औजारों के साथ हमारे बीच उपस्थित होता है। धर्मवीर भारती ऐसे ही रचनाकार हैं। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में उन्होंने निजी प्रसंगों का समाजीकरण किया है। व्यक्ति और व्यवस्था एक साथ यात्रा करते हुए, एक दूसरे की खामियों का पर्दाफाश करते हैं। रचना और समाज, इस प्रकार, एक-दूसरे को आलोकित करते **हैं।**

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।
2. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा’ मध्यवर्ग की संघर्ष-गाथा है’। विवेचन कीजिए।
3. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा’ के शीर्षक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।
4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा’ के चरित्र-विधान की चर्चा कीजिए।
5. माणिक मुल्ला की चारित्रिक विशेषताओं का उदघाटन कीजिए।
6. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा’ के स्त्री-पात्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कीजिए।
7. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा’ कई कहानियों की एक कहानी है।” इस कथन के आलोक में इसके कथानक का विवेचन कीजिए।
8. शिल्प विधान की दृष्टि से -‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ का विवेचन कीजिए।
9. ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
10. हिंदी कथा साहित्य में -‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ का स्थान निर्धारित कीजिए।
11. धर्मवीर भारती के रचनात्मक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।
12. ‘सूरज का सातवाँ घोड़ा’ में व्यंग्य की प्रकृति का विवेचन कीजिए।

व्याख्या के लिए अंश

1. हाँ, लेकिन जो नैतिक विकृति से............बैल की तरह चक्कर लगाते जाते हैं।(पृ0 48 से)
2. स्वर्ग का फाटक ।..................जैसी तन्ना को प्रथम बार मिली थी। (पृ 57 से)
3. टेकनीक। हाँ, टेकनीक पर ज्यादा जोर..................मैं उसका लोहा मानता हूँ।(पृ0 75 से)
4. पर कोई न कोई ऐसी चीज है.......................... सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च(पृ0 100 से)

प्रयोग

1. रात में देखे एक सपने का माणिक मुल्ला की शैली में प्रस्तुति कीजिए।
2. अपने पास-पडोस में सत्ती जैसी किसी स्त्री के साहस और स्वाभिमान की चर्चा करें।
3. सूरज के सात घोड़े क्या भौतिक शास्त्र में उल्लिखित ‘प्रिज्म’ (prism) के सात रंगों से मेल खाते हैं। अपने अध्यापक से चर्चा कीजिए।
4. सात की संख्या के महत्त्व को विभिन्न दृष्टांतों के द्वारा प्रतिपादित कीजिए।

संदर्भ सूची

1. अज्ञेय, भूमिका(प्रथम संस्करण), सूरज का सातवाँ घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
2. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
3. पुष्पा भारती(सं0), धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
4. प्रभाकर क्षोत्रिय(सं0), धर्मवीर भारती,मोहनलाल केडिया हिंदी साहित्य न्यास, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण

फिल्म : सूरज का सातवाँ घोड़ा, निर्देशक श्याम बेनेगल

वृत्तचित्र: धर्मवीर भारती, निर्देशक उदय प्रकाश, निर्माता-साहित्य अकादमी

पाठ में आये महत्वपूर्ण शब्द

1. इतिहासकारों की दृष्टि में भारत का आधुनिक काल 1707 ई0 में औरंगजेब के पतन के बाद और हिंदी आलोचकों के अनुसार 1850 (विश्वनाथ त्रिपाठी) या 1857 (प्रथम स्वाधीनता संग्राम) या 1868 में 'कवि वचन सुधा' के प्रकाशन के साथ मानने का आग्रह रहा है। 1800 ई0 में फोर्ट विलयम कॉलेज की स्थापना के बाद हिंदी, भाषा और शिक्षण के नए रूप ही नहीं नई संभावनाएँ लेकर भी आती है। अत: 1800 ई0 को आधुनिकता के उदय को मानना समीचीन होगा। यही मत डॉ0 नगेंद्र संपादित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में भी व्यक्त किया गया है।

2. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 101, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण

3. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत-हिंदी कोश, पृ0

4. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 ,भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण

5. गिरिजा कुमार माथुर, एक नवीन कथा-प्रयोग:सूरज का सातवाँ घोड़ा, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,

6. ....वही.........पृ0 211

7. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 19 ,भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण

8. नित्यानंद तिवारी, साहित्य का स्वरूप, एन सी ई आर टी , पृ0 67

9. .... वही......................पृ0 67

10. गिरिजा कुमार माथुर, एक नवीन कथा-प्रयोग:सूरज का सातवाँ घोड़ा, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,पुष्पा भारती(सं0) भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण, पृ0 209-10

11. .....वही.........पृ0

12. सूरज पृ0 67

13. सूरज पृ0 79

14. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 86

15.देवेन्द्र इस्सर,धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, पुष्पा भारती(सं0) भारतीय ज्ञानपीठ,प्रथमसंस्करण,पृ0 220

16. धर्मवीर भारती, निवेदन, सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ 11-12

17. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तिव और कृतित्व , साहित्य अकादेमी, पृ0 88

18. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 47

19. राजकुमारगौतम,धर्मवीरभारती, प्रभाकरक्षोत्रिय(सं0), मोहनसाहित्यन्यास,पृ0139-140

20. चंद्रकांत वांदिवडेकर, धर्मवीर भारती: व्यक्तिव और कृतित्व , साहित्य अकादेमी, पृ0 90

21. सूरज का सातवाँ घोड़ा,निवेदन, पृ0 11

22. सूरज का सातवाँ घोड़ा,उपोदघात, पृ0 18

23. सूरज का सातवाँ घोड़ा,उपोदघात, पृ0 19

24. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 98

25. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ012

26. ....वही............पृ0 100

27. अज्ञेय, भूमिका,सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 9

28. अज्ञेय, भूमिका,सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 9

29. ....वही............

30. सूरज का सातवाँ घोड़ा, पृ0 93

शब्दकोश

- **कहानी की टेकनीक** (पृ0 15) कहानी लिखने की वैज्ञानिक विधि। प्रतिभा ईश्वरीय मानी जाती है। टेकनीक को मानवीय कौशल के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस उपन्यास में टेकनीक को यांत्रिक-संवेदना रहित-मानते हूँए व्यंग्य किया गया है।
- (पृ0 15)मौखिक परंपरा से चले आ रहे अनुभव जिन्हें विश्वसनीय माना जाता है।
- **किंवदंतियाँ**

- **कम्युनिज्म** (पृ0 15)communism कार्ल मार्क्स ने कम्युनिज्म के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जो मूलत: वर्ग संघर्ष पर आधारित है।
- (पृ0 16) सूत्रात्मक कथन जो लोक अनुभव को समाहित किए रहते हैं।**कहावत**

- (पृ0)AntonChekhov**चेखव75**

रूसी लेखक। कथाकार औरनाटककार। लेखन की सर्वथा नयी शैली का विकास कर उन्होंने साहित्य को नई दिशा दी।

- जलालुद्दीन अकबर(पृ0 25)

भारत के मुगल सम्राट जिन्होंने 1556 से 1605 तक शासन किया। अकबर एक उदारवादी शासक था जिसने हिंदू-मुसलमानों के सद्भाव के लिये दीन-ए-इलाही नामक नया धर्म भी चलाया।
- **टैगोर**(पृ0 18)

रबीन्द्र नाथ टैगोर को उनकी प्रसिद्ध पुस्तक गीतांजलि के लिये 1913 ई० में नोबेल पुरस्कार मिला। धर्म , दर्शन, संस्कृति पर उनका लेखन विश्वस्तरीय है। उन्होंने विश्वभारती शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय की स्थापना भी की।

- **डाण्टे** (डिवाइन कॉमेडिया) (पृ0 61)

(Dante Alighieri) इटली के लेखक । 1321 में डिवाइन कॉमेडिया की रचना की जो कि एक महाकाव्यात्मक कविता है।

- (फि्ल्म) (पृ0 65) बंगला साहित्यकार शरत् चटर्जी की कृति पर आधारित प्रसिद्ध फिल्म ।यहाँ अभिप्राय विमल राय द्वारा निर्देशित फिल्म से है।**देवदास**

- **ननींदो**(पृ0 50)

- **नीमसार**(पृ0 55) नेमिशारण्य का देशज रूप। उ0प्र0 में स्थित पौराणिक स्थल।

- **नेपोलियन**(पृ080) Napoleon Bonaparte 1804 में फ्रांस का शासक घोषित किए गये। पश्चिमी योरप औरमिस्र के अधिकांश भाग को फ्रांस के लिये जीता। नागरिक अधिकारों औरजीवन-शैली में सुधार के अनेक प्रयास किये।

- (पृ0) उन्नीसवीं शताब्दी के फांसीसी लेखक।उनका प्रसिद्ध उपन्यास मादाम बोवारी Madame Bovary (1857) एक विश्वविख्यात कृति है।**फ्लाबेयर**75Gustave Flaubert)

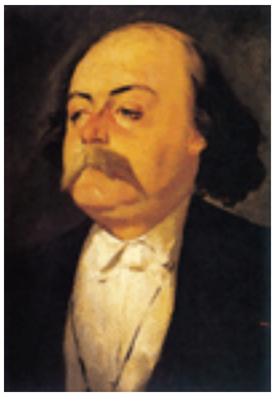

- **बीर बहूटी**(पृ0 69) मटमैले लाल रंग(चेरी कलर) का प्राणी।
- (पृ0) Guy de Maupassant **मोपासां** 75

फ्रांस के लघुकथाकार जिन्होंने 200 से अधिक कहानियाँ औरयात्रा संस्मरण तथा छ: उपन्यास लिखे।

- ग हूँड(पृ0)अग्रिम बंधुओ द्वारा संकलित जर्मन लोककथा है।**रेड राइड** 25

- (पृ0) सामाजिक संरचना की मार्क्सवादी अवधारणा, जिसमें समाज को शोषित और शोषकवर्गों के बीच विभाजित किया जाता है। समतामूलक समाज के निर्माण के लिए इन दोनों वर्गों में संघर्ष की निरंतरप्रक्रिया चलती रहती है।**वर्ग-संबंध/संघर्ष**22/29

- (देवदास, पारो) (पृ0 75) बंगला साहित्यकार जिनकी जीवनी विष्णु प्रभाकर ने 'आवारा मसीहा' के नाम लिखी है।**शरत् चटर्जी**

- **समाजवाद**(पृ0 17) इस पाठ में समाजवाद का अर्थ गाँधी,जयप्रकाश, नरेंद्र देव और लोहिया की विचारधारा से है। भारती स्वयं लोहिया से काफी प्रभावित थे।

- **स्वेज नहर**(पृ0 25)

- **स्कन्दगुप्त**(नाटक,जयशंकर प्रसाद) (पृ0 66) हिंदी की प्रसिद्ध नाट्य कृति

- **सीजर**(पृ0 80) Gaius Julius Caesar

रोमन साम्राज्य के शक्तिशाली प्रणेता । 40 ई०पू० के सिविल युद्ध में फतह हासिल की परंतु राजनीतिक दुश्मनी के चलते इनकी हत्या कर दी गयी।

- **सूर्य** आत्मा जगतस्तस्थुषश्च(

- पृ0 100)सूर्य जगत की आत्मा है।
- **अफलातून**(पृ0 46). Plato

  प्रसिद्ध ग्रीस दार्शनिक जिनका जन्म 428 ई0पू० में हूँआ था। उनका चिंतन औरलेखन बहूँआयामी रहा है।
- (पृ0 71) ज्ञानकोश ।
- **इनसाक्लोपीडिया**
- उदाहरण के लिए देखें www.britannica.com

वेबसाइट और पोर्टल

www.geeta-kavita.com
www.hi.wikipedia.com
www.bbchindi.co.in
www.hindimedia.blogspot.com
www.kavitakosh.com